International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-11-2018; Accepted: 06-12-2018
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2019; Page No. 08-11

बुंदेलखंडी सहायक क्रिया : संरचनात्मक स्वरूप

हेमन्त कुमार राय [1], विजय कुमार कौल [2]

[1-2] पीएच०डी०, सूचना एवं अभियांत्रिकी केंद्र, भाषा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय भाषाओं की अपनी एक परंपरा रही है, इस परंपरा में सबसे पुरानी और प्राचीन भाषा संस्कृत मानी जाती है। "संस्कृत भारती उप महादीप की एक उपभाषा है"। इसे देववाणी अथवा सूर भारती भी कहा जाता है। ये विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। भाषाओं के इसी इतिहास में संस्कृत से विकसित हिंदी भाषा का भी अपना एक स्थान रहा हैं। हिंदी भारतीय विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसकी विविधता और विश्व आर्थिक मंच पर इसकी महत्वता हमे विश्व की शक्तिशाली भाषाओं में से एक बनाती है। भारत में हिंदी भाषा की विभिन्न बोलिया पाई जाती हैं। जिनमें बुंदेलखंडी अथवा बुंदेलखंडी *(IPA:/bʊnd̪elkʰənd̪ɪorbʊnd̪eli,iso693—3code: bns*) एक व्यापक क्षेत्र में बोली जाने वाली पश्चिमी हिंदी की महत्वपूर्ण बोली है। इसकी महत्वता इस बात से ही कि केवल संस्कृत या हिंदी पड़ने वालो को बुंदेलखंडी शब्दो के अर्थ को समझना आसान नहीं होता बुंदेलखंडी अपने आप में हजारो शब्दो को संग्रहित किए हुए है। बुंदेलखंडी के पास ऐसे कई शब्दों के भंडार है जिसे समझना अन्य भाषियों के लिए आसान नहीं होता। बुंदेलखंडी की अपने आप में एक प्राचीन परंपरा भी रही है जिसके अंतर्गत शासकीय पत्र व्यवहार जिसके अंतर्गत बुंदेलखंडी राजाओं के द्वारा शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश, बीजक, राजपत्र एवं मैत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा मे मिलते है। ऐसा माना जाता है कि औरंगजेब और शिवाजी भी "बुंदेलखंडी क्षेत्रो के हिंदी राजाओ से बुंदेलखंडी में ही पत्र व्यवहार करते थे"[2] बुंदेलखंडी व्याकरणिक दृष्टि से भी बहुत मजबूत और समृद्ध मानी जाती है। बुंदेलखंडी के अपने शब्द कोश, कहानी, उपन्यास, राजाओं कि वीर गाथाए, क्रांतिकारी इतिहास, लोकोक्ति, मुहावरे, व्याकरण इसके प्रमाण है।स्थान और भाषा सीमाओं *Grierson* 1968 वॉल्यूम। *IX* भाग- "में उल्लेख है कि बुंदेली मध्यप्रदेश के प्रमुख भाषाओं में से एक है यह पूर्व में उत्तर और पश्चिम उत्तर पश्चिमी हिंदी के निकट से संबंधित कन्नौज और ब्रज बोलियों द्वारा पूर्वी हिंदी के बघेली से घिरा है"।[3] "बुंदेलखंडी से संबंधित बहुत सी निकट बोलिया पाई जाती है। ग्रियर्सन ने अपने LSI (vol.XI, part I) के अंतर्गत 14 बुंदेलखंडी बोलियों को उल्लेख किया" है[4], जो बुंदेली से निकट हैं। ये बोलियाँ निम्न लिखित हैं-मानक बुंदेलखंडी, खटोला, लोधानी पवारी, बनाफरी, कुन्द्री, निभट्टा, भदौरी और तोवारगढ़ि, लोधी, छिंदवाड़ा,बुंदेलखंडी, नागपुरी हिंदी, कोस्ती, कुंभारी।

बुंदेलखंडी क्रिया: संरचनात्मक स्वरूप

बुंदेलखंडी क्रियाएँ भी हिंदी क्रियाओं की भाति ही व्यवहर करती हैं। बुंदेलखंडी क्रियाओं में 'ना' प्रत्यय की जगह 'बौ/वो' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जिन शब्दों से किसी कर्म के होने या करने या किसी प्रक्रिया में होने का बोध हो उन शब्दों को क्रिया कहते हैं। क्रिया वाक्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। क्रिया के बिना वाक्य की संरचना संभव नहीं मानी जाती। क्रिया किसी भी प्रकार के वाक्य को गति प्रदान करने की क्षमता रखती हैं। क्रिया के माध्यम से ही वाक्य के पूर्ण और अपूर्ण होने का पता चलता है।

उदाहरण-(क) राम पुस्तक पढ़त है।
(ख) राम पुस्तक पढ़ रहौ है।
(ग) राम ने पुस्तक पढ़ लई है।

उपरुक्त दिये गये तीनों वाक्यों (क, ख, ग) में एक ही क्रिया 'पढ़' (To Read) का प्रयोग हुआ है। किन्तु क्रमश: दिये गये तीनों वाक्यों में कर्म के पूर्ण होने का बोध अलग-अलग हो रहा है। क्रिया का निर्माण धातु (Root) से होता है। दूसरे शब्दों में यदि परिभाषित किया जाए तो क्रिया के मूल स्वरूप को ही हम धातु कह सकते हैं। जैसे- पढ़, लिख, खा, दौड़, खेल, सुन, बैठ, आदि ये सभी धातु रूप क्रियाओं के ही मूल रूप हैं। इन्ही धातु रूप में 'ना' प्रत्यय लगाकर प्रयुक्त किए जाने वाले रूप को क्रिया कहा जाता है।

	धातु	+	ना = क्रिया
हिंदी-	खेल	+	ना = खेलना
बुंदेलखंडी -	खेल	+	बौ = खेलबौ

बुंदेलखंडी भाषा में भी क्रिया के दो भेद मिलते है जो निम्न प्रकार हैं- 'मुख्य क्रिया' और 'सहायक क्रिया'।

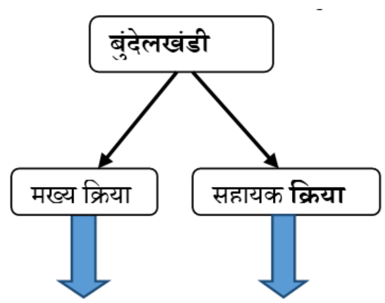

सरल क्रिया काल
संयुक्त क्रिया पक्ष
मिश्र क्रिया वृत्ति

मुख्य क्रिया - क्रिया पदबंध का वह अंश जो कोशीय अर्थ वहन करता है, मुख्य क्रिया कहलाता है जैसे, पढ़, चल, मना कर, भूल जा, आदि।

सरल क्रिया– 'क्रिया' का निर्माण धातु से होता है और धातु से बनने वाली अधिकांश क्रियाएँ एक शब्द की होती, जिन्हे 'एकल' या सरल क्रियाएँ (Simple Verbs)कहते हैं। इनमें धातु के अकर्मक, सकर्मक और प्रेरणार्थक प्रथम एवं द्वितीय सभी रूप शामिल है।

उदाहरण – बुंदेलखंडी- राम आम खात हैं।
हिंदी - राम आम खाता हैं।

संयुक्त क्रिया - हिंदी वाक्य संरचना में 'संयुक्त क्रिया' (Compound Verb)दो मुख्य क्रियाओ के संयोग से निर्मित होती हैं । इन दोनों मुख्य क्रियाओं में पहली क्रिया 'कोशीय क्रिया' (Lexical Verb) और दूसरी क्रिया में पक्ष (Aspect), वृत्ति (Voice), तथा काल (Tense)रूप के प्रत्यय जुड़े होने के कारण इस क्रिया को 'रंजक क्रिया' (Intensifier)कहते हैं ।वाक्य में प्रयुक्त प्रथम क्रिया(कोशीय क्रिया), हिंदी वाक्य संरचना में स्वतंत्र रूप से कोशीय अर्थ प्रदान करती है और इसके विपरीत रंजक क्रिया,वाक्य में कोई कोशीय अर्थव्यक्त नहीं करती बल्कि वह अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ खो देती है और अपने साथ जुड़े पहली क्रिया को ही रंजित करती है, उसके अर्थ में विस्तार करती हैं ।

उदाहरण – बुंदेलखंडी- हमने खाना खालओ।
हिंदी - मैने खाना खालिया।

मिश्र क्रिया – हिंदी में मिश्र क्रिया की रचना संज्ञा, विशेषण या क्रियांगी शब्दों के साथ 'कर' 'हो' आदि क्रियाकरों (Verbalizers)के संयोग से होती हैं । मिश्र क्रिया के प्रथम घटक को क्रियामूल कहते है, इसकी संरचना में संज्ञा या विशेषण होते है तथा दूसरा घटक क्रियाकर, जिसकी संख्या हिंदी में सीमित होती हैं । मिश्र क्रिया संरचना में दूसरे घटक के रूप में प्रयुक्त क्रिया मूलत: संज्ञा और विशेषण के साथ मिलकर अर्थ के स्तर पर एकल अर्थीय इकाई (Single Semantic Unit)का निर्माण करते हैं ।

उदाहरण-

1. बुंदेलखंडी - ऊने सभा शुरू करी।
   हिंदी- उसने सभा आरंभ की।
2. बुंदेलखंडी - राम ने सीता से वादो करो।
   हिंदी - राम ने सीता से वादा किया।
3. बुंदेलखंडी- मेने मीरा की गाड़ी अच्छी करी।
   हिंदी- मैनें मीरा की कार ठीक की।

उपर्युक्त उदाहरण में वाक्य (1) में 'शुरू करना' एक आर्थी इकाई है। जिसमें 'शुरू' (*Start*)एक 'भाववाचक संज्ञा' है, जो क्रियाकर 'करी' (Verbalizer)के साथ मिलकर एकल आर्थीय इकाई (Single Semantic Unit)का निर्माण कर रहा है। वाक्य (2) में 'वादो करबों' (Promise)एक आर्थी इकाई है। जिसमे 'वादो' एक भाववाचक संज्ञा है, जो क्रियाकर 'करो' के साथ मिलकर एकल अर्थीय इकाई (Single Semantic Unit) बना रहा है। वाक्य (3) में 'अच्छी करी' एक आर्थी इकाई है। जिसमे अच्छी (Maintained)एक विशेषण है। जो क्रियाकर 'करी' (Verbalizer) के साथ मिलकर एकल अर्थीय इकाई (Single Semantic Unit) का निर्माण कर रहा हैं।

सहायक क्रिया – हिंदी क्रियापदबंध का वह अंश जो व्याकरणिक सूचना वहन करता है, सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे – 'ता है', 'ता था', 'थ', 'एगा' आदि। हिंदी में सहायक क्रियाओं के अंतर्गत वाच्य, पक्ष, काल, वृत्ति संबंधी प्रत्यय या चिन्नहक शामिल होते हैं। ये सभी हिंदी की वाक्य स्तरीय व्याकरणिक कोटियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिंदी भाषा में सहायक क्रिया की एक विशेष स्थिति होती है। भारतीय भाषाओ (बांग्ला, असमिया, उड़िया, मराठी, आदि) की प्रवृत्ति सहायक क्रियाओं की नहीं है। हिंदी क्रियापदबंध संरचना मुख्य रूप से दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है। जिसमें प्रथम क्रिया के रूप में मुख्य क्रिया और दूसरी क्रिया के रूप में सहायक क्रिया क्रमश: प्रयुक्त होती है। वाक्य संरचना में जहाँ मुख्य क्रिया कोशीय अर्थ प्रदान करती हैं वही सहायक क्रिया वाक्य में व्याकरणिक सूचना (काल, वाच्य, पक्ष, लिंग, वचन आदि) वहन करती है। व्याकरणिक सूचना का तात्पर्य सहायक क्रिया के साथ प्रयुक्त होने वाली व्याकरणिक संबंधी प्रत्यय या चिन्ह से है जो वाक्य को पूर्ण एवं अर्थवान बनाते हैं और हिंदी के वाक्य स्तरीय व्याकरणिक कोटियों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। सहायक क्रिया को 'गौण क्रिया' भी कहा जाता है।

उदाहरण-

(क) बुंदेलखंडी - राम बजार जान लगो।
हिंदी - राम बाजार जाने लगा।

(ख) बुंदेलखंडी - सीता रोन लगी।
हिंदी- सीता रो पड़ी।

(*ग*) बुंदेलखंडी - उ एक अच्छों आदमी तो।
हिंदी - वह एक अच्छा इंसान था।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों की संरचना भिन्न है, प्रथम वाक्य (क) में 'जान लगो' क्रियापद है, जिसमें 'जान' प्रथम क्रिया (V1) और दूसरी क्रिया 'लगो' (V2) है जिसके अंत में प्रत्यय 'ो' जुड़ा होने से वाक्य में व्याकरणिक सूचना प्राप्त हो रही है जिससे यह क्रिया 'सहायक क्रिया' की श्रेणी में आएगी। वाक्य (ख) में प्रयुक्त शब्द 'लगी' एक सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त हो रही है, जो वाक्य में सीधे तौर पर 'रो' (रोना) के कार्य व्यापार को पूर्ण कर रही है और साथ ही लिंग, वचन और पुरुष आदि की भी सूचना प्रदान कर रही है। वाक्य (ग) में 'तो' नि:संदेह मुख्य क्रिया है, जिसे 'कॉप्युला' भी कहा जाता है। 'कॉप्युला' कोई कोशीय क्रिया नहीं होती है। जिस वाक्य में कोई कोशीय क्रिया न हो, वहाँ उस वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया ही मुख्य क्रिया के रूप में व्यवहार करती है। जैसे – 'उ एक अच्छों आदमी तो' वाक्य में 'तो' ही मुख्य क्रिया है। इस शोध पत्र में बुंदेलखंडी सहायक क्रिया से संबंधित उसकी व्याकरणिक संरचना को व्याख्यायित किया गया है।

हिंदी सहायक क्रिया का व्याकरणिक ढाँचा

हिंदी व्याकरण में सहायक क्रिया का अध्ययन एक लंबे समय अवधि से होता आ रहा है। सहायक क्रिया के व्याकरणिक ढाँचा का तात्पर्य उसके व्याकरणिक कोटियों (काल, पक्ष, वृत्ती, लिंग, वचन, पुरुष) से है, जो सहायक क्रिया में प्रत्यय के रूप में जुड़ती है और वाक्य में व्याकरणिक अर्थ प्रदान करती हैं। व्याकरणविदों में एस॰ एच॰ केलाँग (1876), के॰ पी॰ गुरु (1920), के॰ वाजपेयी (1958), यमुना काचरु (1966), एच॰ आल्फेन (1975), सूरजभान सिंह (1997), ओमकार कौल (2008), आदि हुए है, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से सहायक क्रिया के नए व्याकरणिक ढाँचे कि प्रस्तुत किया है। सहायक क्रियाओं से संबंधित व्याकरणविदों के विचार यहाँ दिए जा रहे है-

- ऐसी क्रियाएँ जो मुख्य क्रिया के सहायक रूप में प्रयुक्त होती हैं, उन्हे सहायक क्रिया कहते हैं। [5]
- जिस क्रिया कि सहायता से संयुक्त काल बनाए जाते हैं, उन्हे सहायक क्रिया कहते हैं। [6]

- मुख्य क्रिया के सहायक क्रिया के रूप में आकार उसके अर्थ को पूर्णता प्रदान वाली क्रिया, सहायक क्रिया कहलाती है।[7]
- सहायक क्रिया सदैव काल, वचन और लिंग तथा पुरुष के लिए चिन्हित होती है। [8]
- क्रियापदबंध का वह अंश जो व्याकरणिक सूचना देता है, सहायक क्रिया कहलाता है। [9]
- सहायक क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जो क्रिया पदबंध में मुख्य न होकर किसी-न-किसी रूप में सहायक मात्र होती है।[10]

डॉ. उदयनारायण तिवारी ने आँव, आय़, आँय, बुंदेलखंडी के सहायक क्रिया के रूप बतलाये हैं। पर वास्तव में ये निश्चयात्मकता के ही बोवक है, सहायक क्रिया के साथ क्वचित ही प्रयुक्त होते हैं। डॉ. सक्सेना ने इन्हें सहायक क्रिया के अवषेष चिन्ह कहा है। डॉ. तेस्सीतोरी ने इन्हें निश्चयात्मक सर्वनाम के अन्तर्गत ही स्थान दिया है। बुंदेलखंडी में प्रयुक्त यह 'आय' संस्कृत के 'अय' से विकसित जान पड़ता है। अपभ्रंश मे भी इसके एह, एहि रूप वर्तमान हैं, जिनका प्रयोग संकेतबोधक सर्वनाम के रूप में हुआ है। बुंदेलखंडी में इसके आहौं, आहैं आदि रूपों का प्रयोग मिलता है, किन्तु यह प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में ही होता है सहायक क्रिया के रूप में नहीं यथा- आहौ, जाहौ, आदि।
इन शब्दों 'आय' के रूप आहो (आय+हो), जाहो (जाय+हो) भविष्यवाची हैं।

बुंदेलखंडी में कुछ प्रयोग अवश्य ऐसे मिलते हैं, जिनमें 'आय' के कुछ रूप सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त दिखाई देते हैं। यथा- उए आवनैं है, बौ आऔ है आदि।इससे यह स्पष्ट है कि बुंदेलखंडी मे 'आय' तथा इसके तिङन्तीय रूपों का प्रयोग संकेतवाची सर्वनाम, निश्चयात्मक, मुख्य क्रिया एवम् सहायक क्रिया के रूप में होता है। बुंदेलखंडी की द्वितीय सहायक क्रिया 'हो' है, जिसका प्रयोग स्वरान्त तथा व्यञ्जनान्त दोनों प्रकार की धातुओं के साथ होता है। होहै, हुइऐ, हुइऔ, हूऔ आदि इसके उदाहरण हैं-

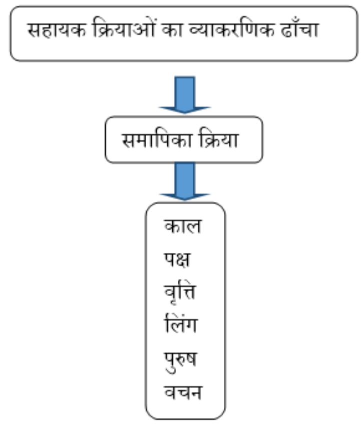

क्रमांक	**व्याकरणिक कोटि (Grammatical Category)**	**प्रतिपादक (Exponents)**
	समापिका क्रिया (Finite Verb)	
	काल	
1.	वर्तमान काल	(हे/हो/हे)
2.	भूतकाल	(तो/ती/ते)
3.	भविष्यकाल	(हे/हे/हे)
	पक्ष	
1.	नित्य पक्ष	(त/त/त)
2.	सातत्य पक्ष	(रओ/रई/रये)
3.	पूर्ण पक्ष	(ओ/ई/ये)
4.	पूरक पक्ष	(ओ/ई/ये)
	वृत्ति	
1.	आज्ञार्थक	*(अ/ज/न)*
2.	अनिश्चित संभाव्य	(त य/व य/ ओ य)
3.	निश्चित संभाव्य	(त हुज्जे/व हुज्जे/ओ हुज्जे)
	लिंग-वचन	
1.	पुल्लिंग – एकवचन	(ओ)
2.	पुल्लिंग – बहुवचन	(ये)
3.	स्त्रीलिंग – एकवचन	(यी)
4.	स्त्रीलिंग – बहुवचन	(यी)
	पुरुष – वचन	
1.	प्रथम पुरुष – एकवचन	*(ऐ)*
2.	प्रथम पुरुष – बहुवचन	(ये)
3.	मध्यम पुरुष – एकवचन	(ए)
4.	मध्यम पुरुष – बहुवचन	(एँ)
5.	अन्य पुरुष – एकवचन	(या)
	अन्य पुरुष – बहुवचन	(एँ/यें)
	वाच्य	
1.	कृर्तवाच्य	*(क्रिया के सभी रूप)*
2.	अकृर्तवाच्य	(या जा)

निष्कर्ष

सहायक क्रिया वस्तुतः अपूर्ण क्रियाएँ होती हैं। जब तक वे मुख्य क्रियाओं के साथ नहीं जुड़तीं, उनकी कोई सार्थकता नहीं है। इसके विपरीत मुख्य क्रिया भी बिना इनकी सहायता के अपने व्यापार में असमर्थ होती हैं। यथा- 'मैं जात हौ' इस वाक्य की मुख्य क्रिया 'हौ' है, पर जब तक वह मुख्य क्रिया 'जात' सहायक क्रिया का योग प्राप्त नहीं करती, तब तक केवल 'मैं हौं' कहने से कहने का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता । बुंदेलखंडी में जात, आत, खात, लात आदि क्रिया-रूपों के स्थान पर आउत, खाउत, लाउत आदि रूपों की प्रयोग भी सहायक क्रिया के रूप में होता है। यथा- मैं जाउत हौ, बौ आउतहै आदि।

संदर्भ सूची

1. सिंह, सूरजभान: हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण
2. श्रीवास्तव, रवीन्द्र नाथ: हिंदी भाषा: संरचना के विविध आयाम
3. तिवारी, भोलानाथ: हिंदी की भाषिक संरचना
4. गुरु, कामता प्रसाद: हिंदी व्याकरण
5. बासुतकर, महादेव मारुति: हिंदी की क्रियापद व्यवस्था
6. गर्ग, महेशचंद्र : परिनिष्ठित हिंदी का रूप ग्रामिक अध्ययन, पृष्ठ संख्या – 79
7. Kachru, Yamuna : An Introduction to Hindi Syntax, page no-121
8. सिंह, सूरजभान : हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण, पृष्ठ सं – 58
9. तिवारी, भोलानाथ : हिंदी भाषा की संरचना, पृष्ठ संख्या – 162
10. भारतीय साहित्य संग्रह : अध्याय बारह, वाच्य वर्ग
11. सृजन गाथा : संयुग्मित क्रिया मेन रूपको का महत्व
12. https://www.ethnologue.com/language/bns
13. https://hi.wikipedia.org
14. http://bharatdiscovery.org